17 अप्रैल 2018, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 41, अंक : 2 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अप्रैल (द्वितीय), 2018 (वीर नि. संवत्-2544) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

महावीर जयन्ती सानन्द संपन्न

(1) जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में महावीर जयन्ती के अवसर पर दिनांक 29 मार्च को प्रात: ध्वजारोहण पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री चिन्मयजी जैन आदि के करकमलों द्वारा पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। सभी महानुभावों का तिलक लगाकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर टोडरमल महाविद्यालय के सभी छात्र व वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल के सभी सदस्य उपस्थित थे। इसके पश्चात् प्रभात फेरी निकाली गई, जिसके अन्तर्गत श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल बापूनगर एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में समवशरण की झांकी सजाई गई, जिसे देखकर संपूर्ण जैनसमाज मंत्रमुग्ध हो गई।

जिनेन्द्र भक्ति एवं नृत्य-गान करते हुए रथयात्रा लालकोठी मन्दिर पहुँची, जहाँ ध्वजारोहण एवं कलशाभिषेक हुआ। इसके पश्चात् रथयात्रा पार्श्वनाथ चैत्यालय पहुँची, जहाँ ध्वजारोहण व कलशाभिषेक के पश्चात् आयाजित सभा में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के मार्मिक उद्बोधन का लाभ मिला। इसके पश्चात् रथयात्रा जयपुर शहर की मुख्य रथयात्रा में सम्मिलित हुई।

महावीर जयंती की पूर्व संध्या पर श्री वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल, बापूनगर द्वारा टोडरमल स्मारक में महावीर जन्म कल्याणक के उपलक्ष्य में संगीतमय भजन-संध्या का आयोजन किया गया।

(2) दुबई : यहाँ भगवान महावीर की जन्म जयंती अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक मनाई गई। नित्य-नियम पूजन के उपरांत भगवान महावीर की विशेष पूजनकर अर्घ्य चढाये गये। पूजन-विधि का संचालन स्थानीय विद्वान डॉ. नीतेशजी शास्त्री द्वारा किया गया।

इस अवसर पर अरिहंत जैन पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये, जिसका संचालन अनुश्री जैन ने किया।

(3) लोनावला-मुम्बई : यहाँ स्थित श्री महावीर जिनालय में महावीर जयंती के अवसर पर भगवान महावीर की सामूहिक पूजन की गई।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का सी.डी. प्रवचन एवं ब्र. हेमन्तभाई गांधी द्वारा प्रासंगिक प्रवचन हुआ। साथ ही गुरुदेवश्री के परिवर्तन समय की तात्कालिक परिस्थितियों से अवगत कराया गया। प्रवचन के बाद जिनमंदिर व स्वाध्याय भवन में नवीन स्थापित तीर्थक्षेत्रों, आचार्य भगवन्तों, परमागम की गाथाओं, प्राचीन ज्ञानी-विद्वानों, पौराणिक कथाओं और जिनशासन परम्परा के पाषाण शिलापट्टों की अनावरण विधि संपन्न हुई।

कार्यक्रम में अनंतराय सेठ परिवार, शारदाबेन रतिलाल शाह परिवार, अक्षयभाई दोशी परिवार के साथ-साथ मुम्बई एवं पूना के लगभग 400 साधर्मियों की उपस्थिति रही। समस्त कार्यक्रम का संचालन विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा किया गया।

डॉ. हुकमचंद भारिल्ल का विशेष व्याख्यान

मन्दसौर (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 28 मार्च को रात्रि में दिगम्बर-श्वेताम्बर सहित सम्पूर्ण जैन समाज की विशाल उपस्थिति में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा '**भगवान महावीर और उनकी अहिंसा**' पर मार्मिक व्याख्यान का लाभ मिला। तत्पश्चात् सभा के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा भी '**भगवान महावीर और उनके सिद्धांतों**' पर व्याख्यान हुआ।

दिनांक 29 मार्च को दोपहर 4 बजे नरसिंहपुर दिगम्बर जैन समाज की ओर से भगवान महावीर के जीवन पर डॉ. भारिल्ल का व्याख्यान हुआ।

दिनांक 30 मार्च को प्रात: मुमुक्षु मण्डल की ओर से आयोजित दिगम्बर जैन धर्मशाला के विशाल मैदान में डॉ. भारिल्ल का एक व्याख्यान णमोकार महामंत्र पर हुआ।

इन सभाओं में डॉ. भारिल्ल द्वारा लिखित 'अहिंसा : महावीर की दृष्टि में' और 'वीतरागी व्यक्तित्व : भगवान महावीर' नामक कृतियाँ धर्मप्रभावना के रूप में सभी साधर्मीजनों को वितरित की गईं। इसके अतिरिक्त 5000 घंटो की सी.डी./डी.वी.डी. भी अनेक साधर्मीजनों को वितरित की गईं।

मन्दसौर के पूर्व दिनांक 27 मार्च को भीलवाड़ा (राज.) जिनमंदिर में सायंकाल डॉ. भारिल्ल द्वारा '**गति अनुसार मति या मति अनुसार गति**' विषय पर व्याख्यान का लाभ मिला।

सम्पादकीय –

ऐसे क्या पाप किये? 8

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

आज तक मैंने अपनी शक्ति व सामर्थ्य को नहीं पहचाना, मैं तो स्वयं में ही परिपूर्ण हूँ। मुझे सुखी होने के लिए इन बाह्य भोग सामग्री की किंचित् भी आवश्यकता नहीं है। अब यह बात मुझे अच्छी तरह समझ में आ रही है, ''अतएव मैं यह समस्त भोग सामग्री आपकी साक्षीपूर्वक त्यागने या समर्पित करने आया हूँ।'' ऐसी भावना भाता हुआ ज्ञानी भक्त भगवान के चरणों में अष्टद्रव्य समर्पित करता है।

इस प्रकार पूजन करने के प्रारम्भ में स्वस्ति विधान में जो ''समग्र पुण्यं एकमना जुहोमि'' वाक्य आया, उसका एवं द्रव्यशुद्धि व भावशुद्धि तथा विविध आलम्बनों का संक्षेप में स्पष्टीकरण किया।

पूजा के प्रारम्भ में अर्घ चढ़ाने हेतु हम निम्नांकित छन्द बोलते हैं –

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले–जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।

इस पद्य में कहा गया है कि 'जिनगृहे जिननाथमहं यजे' अर्थात् मैं जिनमन्दिर में जिननाथ की पूजा करता हूँ। वीतरागी जिननाथ की पूजा करनेवाला जीव किसी भी प्रकार के रागी देवों को कभी पूज्य नहीं मान सकता। पूजा/भक्ति का भाव भले ही शुभभाव है; परन्तु भक्त तो वीतरागी भगवान के प्रति समर्पित है। शुभराग होता है, पर उसकी दृष्टि शुभराग पर नहीं है, वीतरागी भगवान पर है।

उपर्युक्त पद्य में यह भी कहा है कि जहाँ जिननाथ विराजमान हैं तथा जिसमें हम जिननाथ की पूजा करते हैं, वह जिनमन्दिर ''धवलमंगलगान–रवाकुले'' अर्थात् धवल है, उज्ज्वल है और मंगलकारी गान के नाद से गूँज रहा है। ऐसे जिनमन्दिर में मैं अष्टद्रव्य के द्वारा पूजा करता हूँ वे अष्टद्रव्य इसप्रकार हैं –

'उदकचंदनतन्दुलपुष्प–कैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः' अर्थात् उदक (निर्मल जल), चन्दन, तंदुल, पुष्प, नैवेद्य, मणिमय दीप, सुगंधित धूप, सरस और फल इन अष्टद्रव्यों से मैं जिननाथ की पूजा करता हूँ।

जल – जल द्वारा पूजा करते हुए भक्त सोचता है – १. जल नम्रता और निर्मलता का प्रतीक है। जल द्वारा पूजा करते समय मन जल जैसा निर्मल तो हो, पर जल जैसा अस्थिर (चंचल) नहीं होना चाहिए, क्योंकि जिस तरह हिलते हुए जल में मुखाकृति नहीं दिखती, उसीप्रकार अस्थिर मन में भगवान के दर्शन नहीं होते।

२. जल जिसतरह मैल धो देता है, उसीप्रकार जल चढ़ाकर राग–द्वेष रूपी मैल धो डालना चाहिए। कहा भी है –

मलिन वस्तु हर लेत सब जल स्वभाव मल छीन।
जासों पूजों परम पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।।

३. यह जल अनादि काल से पिया, परन्तु प्यास नहीं बुझी; विषयों की आशारूपी प्यास बुझाने के लिए भी विषयरूप जल पिया, परन्तु वह आशारूपी प्यास भी इस जल से शान्त नहीं हुई; अत: यह जल आपके चरणों में समर्पण करके समता रूपी जल पीना चाहता हूँ।

४. जैसे जल अपने नम्र स्वभाव से पत्थर जैसी कठोर वस्तु को भी धीरे–धीरे काट देता है, उसीप्रकार आत्मा भी धीरे–धीरे विकार को काट दे–शमन कर दे या पचा दे, तभी जल द्वारा पूजा करना सार्थक है।

चन्दन – १. चन्दन शीतलता, सहनशीलता और सुगन्ध का प्रतीक है। कहा भी है – 'चन्दन शीतलता करे तपतवस्तु परवीन' अर्थात् चन्दन तप्त वस्तु को शीतल बना देता है। चन्दन द्वारा पूजा करते समय भक्त यह भावना भाता है कि ''मेरा आत्मा स्वभाव से तो चन्दन से भी अधिक शीतल है। मैं सदा उसी आत्मा का आश्रय करूँ, जिससे आधि–व्याधि–उपाधिमय त्रिविध ताप का शमन होकर मुझे समाधि की प्राप्ति हो।''

२. चन्दन को कूड़े के ढेर पर रखा जावे, घिसा जावे, काटा जावे तो वह काटनेवाली कुल्हाड़ी को भी सुगन्धमय बना देता है। चन्दन द्वारा पूजा करते समय भक्त यह भावना भाता है कि ''चंदन के वृक्षवत् बाह्य अनेकप्रकार की प्रतिकूलताएँ आने पर भी मैं उनका ज्ञाता–दृष्टा बना रहूँ, मैं अपने ज्ञानमय स्वभाव को कभी न छोड़ूँ।''

अक्षत – १. अक्षत चढ़ाते समय भक्त की यह भावना होती है कि वह अक्षत की भाँति अजन्मा हो जाय। जिसतरह अक्षत बोने पर उगते नहीं हैं, उसी प्रकार मेरा आत्मा पुनर्जन्म न ले।

२. अक्षत अर्थात् चावल जैसे उज्ज्वल हैं, उनके ऊपर अब

धान का छिलका नहीं, चावल के ऊपर कन नहीं, लालिमा नहीं; उसी प्रकार मेरा आत्मा भी शरीर, राग-द्वेष और भेदभावों से भिन्न एक अखण्ड, अभेद उज्ज्वल ज्योति स्वरूप है। कहा भी है - ''उज्ज्वल हूँ कुन्द धवल हूँ, प्रभु, पर से न लगा हूँ किंचित भी।''

३. अक्षत का आलम्बन लेकर भक्त भगवान से कहता है कि – उत्तम अक्षत तो प्रभुवर आप ही हो, जो कभी भी क्षत को प्राप्त नहीं होते, आपकी पूर्ण निर्मल पर्याय कभी मलिन नहीं होती।

पुष्प – पुष्प समर्पण करते समय भक्त भावना भाता है। जिसतरह यह पुष्प अन्दर बाहर एक समान सुकोमल है, सुगन्धित है उसीप्रकार मेरा हृदय भी अन्दर-बाहर एक समान सुकोमल (सरल) और जगत को सुखद सौरभ से भरने में समर्थ हो जावे।

लोक में पुष्प को काम का प्रतीक माना गया है अतः भक्त भावना भाता है कि ''मैं काम की पीड़ा नाश करने हेतु यह पुष्प आपके चरणों की साक्षी से त्यागता हूँ। अर्थात् कामवासना को कम करने का संकल्प करता हूँ।''

नैवेद्य – लोक में नैवेद्य क्षुधा पूर्ति का साधन है, भक्त कहता है कि ''मैंने अनादिकाल से सभी तरह के भक्ष्याभक्ष्य पदार्थों का भक्षण किया तो भी मेरी क्षुधा शान्त नहीं हुई। अतः अब मैंने समझा कि सचमुच क्षुधा रोग मिटाने का उपाय भर पेट खाना नहीं है, अतः मैं सर्व प्रकार के व्यंजनों का त्याग करने की भावना भाता हुआ यह नैवेद्य समर्पित करता हूँ और क्षुधा रोग से रहित स्वभाव वाले आत्मा की शरण में जाता हूँ।''

दीपक – दीपक द्वारा पूजा करते समय भक्त की भावना होती है कि -

१. ''जैसे दीपक में जबतक तेल (स्नेह) है, तबतक वह जलता है, उसीप्रकार जबतक मुझमें स्नेह (राग) है, तबतक मुझे संसार में त्रिविध ताप से जलना पड़ेगा-परिभ्रमण करना पड़ेगा। हे भगवन्! दीपक द्वारा आपकी पूजा करते समय मैं भावना भाता हूँ कि मैं राग का सर्वथा अभाव करके संसार परिभ्रमण से छूट जाऊँ।

२. लौकिक दीपक के लिए तेल, घी चाहिए। जबतक तेल-घी हो, तभी तक प्रकाश देता है, किन्तु चैतन्यदीपक के लिए अन्य किसी भी बाह्य पदार्थ की किञ्चित्मात्र भी आवश्यकता नहीं है, वह स्वयं प्रकाशमान है। दीपक द्वारा पूजा करते समय भक्त कहता है कि ''मैं भावना भाता हूँ कि मेरा चैतन्यदीपक सदा स्वयं प्रकाशित रहे और अन्य कोई भी परद्रव्य-परभाव की उसे आवश्यकता कभी न हो।''

३. ''रत्नदीपक के अतिरिक्त जितने भी अन्य लौकिक दीपक हैं, वे सब प्रचण्ड वायु के कारण बुझ जाते हैं; किन्तु रत्नदीपक स्वयं प्रकाशमान होने के कारण वह प्रचण्ड वायु से भी नहीं बुझता; भक्त कहता है कि ''वैसे ही मेरे चैतन्यदीपक का प्रकाश अनन्त प्रतिकूलताओं से भी समाप्त न हो।''

४. दीपक द्वारा पूजा करते समय भक्त भावना भाता है कि ''आपके केवलज्ञान सूर्य से सम्यग्ज्ञान पाकर मेरा छोटा-सा ज्ञानदीपक सदाकाल अन्तर में प्रकाशमान रहे। जैसे दीपक का प्रकाश अन्धकार का नाश करनेवाला है। वैसे ही ज्ञानदीपक द्वारा मेरे मोहान्धकार-अज्ञानतिमिर का सर्वथा नाश हो और पदार्थ का स्वरूप जैसा है, वैसा ही मेरे ज्ञान में प्रतिभासित हो।''

५. दीपक के निकट कोई पदार्थ हो तो दीपक उसको प्रकाशित कर सके और दूर हो तो प्रकाशित न कर सके; परन्तु ज्ञान का स्वभाव ऐसा नहीं है। ज्ञानस्वभाव तो एक जगह रहकर भी लोकालोक को जान सकता है। इसीकारण भक्त कहता है कि ''हे प्रभो! अन्य ज्ञेय पदार्थ, चाहे वे समीप हों या दूर हों तो भी मैं उनको ज्ञाता होकर सदा जानता ही रहूँ - ऐसा स्वभाव प्रगट हो जावे।''

६. दीपक के निकट सोने का ढेर हो तो हर्ष से दीपक का प्रकाश बढ़ता नहीं है तथा कोयले का ढेर हो तो विषाद से प्रकाश घटता नहीं है। दीपक तो उन दोनों को ही समानरूप से प्रकाशित करता है; उसीप्रकार ज्ञानदीपक का प्रकाश अनुकूल पदार्थ हो तो बढ़ जाये और प्रतिकूल पदार्थ हो तो घट जाये - ऐसा कभी नहीं होता, इसलिए भक्त ऐसा सोचता है कि ''सर्वपदार्थों को मैं स्वज्ञान द्वारा ज्ञाता-दृष्टापने जानता ही रहूँ; प्रतिकूलता से और अनुकूलता से मैं प्रभावित न हो जाऊँ।''

७. जैसे दीपक स्वभाव से ही स्व-परप्रकाशक है, वैसे ज्ञानदीपक भी स्वभाव में ही स्व-परप्रकाशक है, इसलिए भक्त भावना भाता है कि ''मेरा ज्ञानदीपक सदाकाल प्रकाशवान ही रहे, अन्य पदार्थ व मोह-राग-द्वेष आदि भावों का कर्ता न बने।''

इसीप्रकार धूप और फल समर्पण के समय भक्त विचारता है कि अष्टकर्मों को तपस्वचरणरूप ज्वाला में जलाकर मोक्षफल प्राप्त करूँ। इसप्रकार पूजा का मूल प्रयोजन तो मुक्ति प्राप्त करना ही है। **(क्रमशः)**

क्या वीर का अवतार था, बस मात्र अन्यों के लिये? (2)

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

विगत आलेख में प्रश्न उठाया गया था कि ''क्या वीर का अवतार था मात्र अन्यों के लिये'' महावीर की ओर से उन प्रश्नों का उत्तर दिया गया है निम्नलिखित पदों में जो स्थानाभाव के कारण गत अंक में नहीं दिये जा सके थे। प्रस्तुत है –

महावीर कहते हैं कि **अनादिकाल से आज तक हम सभी संसार में ही सुख खोजते रहे। हमने संसार में सुख पाने के लिये क्या-क्या प्रयत्न नहीं किये, ऐसा कुछ शेष न रहा जो और किया जा सके। संसार में सुख की खोज का अंतिम निष्कर्ष यह रहा कि संसार में सुख है ही नहीं। संसार तो एकांत दु:ख ही है, तब संसार में सुख पाने के यत्न व्यर्थ हैं, तब कोई क्यों ऐसा असंभव प्रयास करे?**

जब उन्हें स्वयं संसार में सुख दिखाई नहीं दिया तो अन्य जीवों को संसार में सुख पाने का मार्ग कैसे बतला सकते थे, बस इसीलिये महावीर परोपकार की राह पर आगे नहीं बढे मात्र अंतर्लीन हो गये।

यूं भी राजा का आदेश तो सिर्फ एक देश पर चलता है, वे अपने आदेशों से कितने जीवों का भला कर सकते थे। **महावीर की करुणा के पात्र मात्र एक देश के नागरिक नहीं सिर्फ सम्पूर्ण मानव प्रजाति भी नहीं वरन् जगत के समस्त प्राणीमात्र थे,** इसीलिये तो उन्हें तीर्थंकर प्रकृति का बंध हुआ था।

उन्होंने अपनी आत्मा को जाना, पहिचाना और उसी में लीन हो गये। इसप्रकार मात्र उपदेश से ही मोक्ष का मार्ग नहीं बतलाया वरन् व्यवहार में करके दिखा दिया। जगत के प्राणीमात्र पर और भव्य जीवों पर यही उनका सर्वोत्कृष्ट उपकार है।

द्रव्यदृष्टि से तो हम सभी परमात्मा हैं ही, अब उनके बतलाये मार्ग पर चलें, आत्मलीन हो जाएं और पर्याय में भी परमात्मा बन जाएं।

उत्तर –

(9)

चिरकाल से संसार में, सुख खोजते थे वे अरे।
वीभत्स के उस दौर में, उपक्रम भी क्या-क्या ना करे।।
कुछ ना रहा अब शेष था, फिरइक बार करने के लिये।
इसलिये ना वीर निकले, पर उपकार करने के लिये।।

(10)

थम चुकी थी खोज अब, यह खोज का निष्कर्ष था।
एकांत दु:ख संसार में, यह सोच का उत्कर्ष था।।
तब क्यों करे कोई जतन, संसार में सुख के लिये।
क्या वीर का अवतार था, बस मात्र अन्यों के लिये।।

(11)

जो इष्ट ना अपने लिये, वह अन्य को कैसे करे।
कर्तापने की बुद्धि से, संसार में जीवे मरे।।
उनका तो जीवन था अरे, भव नाश करने के लिये।
ना वीर का अवतार था, बस मात्र अन्यों के लिये।।

(12)

दृष्टि को जग से हटा, निज आत्मा में थापकर।
की धर्म की स्थापना, निज पुण्य-पाप विनाशकर।।
सबको बताया मार्ग यह, संसार हरने के लिये।
हाँ वीर का उपकार था, यह मात्र अन्यों के लिये।।

(13)

उनका यही उपकार था, कुछ ना किया संसार में।
कल्याण का यह रास्ता, दिखला दिया व्यवहार में।।
नहीं और कोई मार्ग है, भव ताप हरने के लिये।
यह वीर का उपदेश था, कल्याण करने के लिये।।

(14)

कुछ ना किया उनने अरे, भवि जीव तब भी पा गये।
जो छोड़ जग की मोह-माया, निज आत्मा में आ गये।।
पर्याप्त है निज लीनता, भगवान बनने के लिये।
यह वीर का उपदेश था, भवपीर हरने के लिये।।

(15)

आओ भविजन आओ निज में, भगवान बन जाएं सभी।
बनना-बनाना है किसे, भगवान हैं हम सब अभी।।
चिरकाल का भवताप का, अभिशाप हरने के लिये।
यह वीर का आह्वान था, कल्याण करने के लिये।।

(16)

वीर तेरी वंदना का, सच्चा सुफल अब पाऊँगा।
जब छोड़ सब जग द्वंद मैं, निज आत्मा को ध्याऊँगा।।
तुमने बताया वीर जो, पथ कल्याण करने के लिये।
हम भी लगें उस मार्ग पर, भगवान बनने के लिये।।

(17)

राजा करे तो क्या करे, बस इक देश पर अधिकार है।
प्राणियों का भूमि पर, कितना अधिक विस्तार है।।
महावीर का था चिंतवन, प्रत्येक प्राणी के लिये।
हर देश के हर काल के, हर अज्ञ-ज्ञानी के लिये।।

(18)

सच्ची यही इक रीत, पर उपकार करने के लिये।
चलकर दिखाया मार्ग, सब संदेह हरने के लिये।।
फिर भी समझ जो ना सके, निज कल्याण वे कैसे करें।
हो उनका भला स्वकाल में, वे काम अपना कर चले।।

(19)

कर चले रे वीर तुमने, काम अपना कर दिया।
किया प्रकाशित आत्मा, मिथ्यात्व तम भी हर लिया।।
रे भव्य! यह वह कार्य था, जिसके लिये जाने गये।
आताप हर सुख शांति कर, संसार तज शिव को गये।।

मेरा महाविद्यालय

गुरु कहान के चरण कमल से, हुआ सुगन्धित ये आलय।
कुन्दकुन्द के हृदय से निकला, टोडरमल का विद्यालय।।

शुद्धातम से मिलन कराता, और दिलाता सिद्धालय।
ज्ञानतीर्थ पदवी से भूषित, टोडरमल का विद्यालय।।

हिमगिरि की उत्तुंग चोटि सा, भव्यों का है शरणालय।
निखिल विश्व जिसमें है बसता, टोडरमल का विद्यालय।।

तत्त्वों का रसपान कराता, समकितियों का श्रद्धालय।
समवशरण का दिव्यरूप है, टोडरमल का विद्यालय।।

सागर सा गम्भीररूप, अनुपम रत्नों का ये आलय।
ज्ञानी हंस सदा ही विचरते, टोडरमल का विद्यालय।।

– शुभांशु जैन, कोटा (शास्त्री तृतीय वर्ष)

सोश्यल मीडिया द्वारा तत्त्वप्रचार

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सभी गतिविधियों की जानकारी आप हमारे facebook पेज pandit todarmal smarak trust के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।
www.facebook.com/ptst.jaipur

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सभी गतिविधियों की जानकारी एवं सत्साहित्य का ऑनलाईन ऑर्डर देने हेतु visit करें –
www.ptst.in

श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित नियमित कक्षाओं एवं प्रवचनों को आप USTREAM के माध्यम से लाईव देख सकते हैं।
www.ustream.tv/channel/ptst

श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित नियमित कक्षाओं एवं प्रवचनों का लाभ आप हमारे YouTube चैनल PTST के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।
www.youtube.com/user/todarmalsmaraktrust

जैनधर्म को प्रारम्भ से सीखने अथवा और भी विविध विषयों को डॉ. संजीवकुमार गोधा द्वारा YouTube पर सुनने के लिये निम्न लिंक का प्रयोग करें –
www.youtube.com/c/drsanjeevgodha

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं
श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिग.जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा आयोजित

52वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 20 मई 2018 से 6 जून 2018 तक

- आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के भवतापहारी सी.डी. प्रवचन का प्रसारण।
- डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि अनेक आत्मार्थी विद्वानों का प्रवचन, कक्षाओं के माध्यम से भरपूर लाभ।
- पाठशाला के अध्यापकों को बालबोध पाठमालायें एवं वीतराग-विज्ञान पाठमालाओं के अध्यापन हेतु विशेष प्रशिक्षण।
- देशभर के अलग-अलग प्रान्तों से पधार रहे साधर्मीजनों का मेला।
- श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु अपूर्व अवसर।
- बालकों हेतु डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा विशेष कक्षायें।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों का चयन इसी प्रशिक्षण शिविर में होता है; अत: महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अधिक से अधिक छात्रों को प्रेरणा देकर शिविर में भिजवायें।

संपर्क सूत्र -

(1) ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर 302015 **(राज.) फोन–**0141–2705581, 2707458;
Email - ptstjaipur@yahoo.com
(2) तीर्थधाम सिद्धायतन, मु.पो.–द्रोणगिरी, ग्राम–सेंधपा, तह.–बड़ामलहरा, जिला–छतरपुर 471311 **(म.प्र.); मुन्नालाल जैन (मंत्री) –** 9406569839, **पण्डित शुभम शास्त्री –** 834938156, **कार्यालय –** 7389242836

द्रोणगिरि पहुंचने का मार्ग – द्रोणगिरि के लिये निकटतम रेलवे स्टेशन सागर **(SGO)** है। यहाँ से द्रोणगिरि 120 कि.मी. है, सागर से बड़ामलहरा के लिये बसें हर समय मिलती हैं। इसके अलावा ललितपुर/झांसी से भी जा सकते हैं।

'अहिंसक स्वस्थ जीवन' प्रकाशित

श्री महावीर जन्मकल्याणक के अवसर पर टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' द्वारा लिखित 'अहिंसक स्वस्थ जीवन' पुस्तक का सप्तम संस्करण प्रकाशित हुआ। जैन श्रावकाचार को सुरक्षित रखते हुए स्वास्थ्य संबंधी रोचक जानकारी इस पुस्तिका में दी गई है। ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व डॉ. दीपकजी 'स्वास्थ्य के अहिंसक नुस्खे' एवं 'अहिंसक आहार : स्वास्थ्य का आधार' पुस्तकें लिख चुके हैं। तीनों पुस्तकों का सेट मंगाने हेतु मोबाइल नं. 9352990108 पर संपर्क करें।

आगम के आलोक में –

समाधिमरण या सल्लेखना

13

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

कषाय सल्लेखना

पण्डित सदासुखदासजी अब कषाय सल्लेखना की बात करते हैं –

''काय सल्लेखना की चर्चा के उपरान्त अब कषाय सल्लेखना की बात करते हैं –

जैसे तपश्चरण से काया को कृश किया जाता है; वैसे ही राग-द्वेष-मोहादि कषायों को भी साथ-साथ ही कृश करना वह कषाय सल्लेखना है। **बिना कषायों की सल्लेखना किये काय सल्लेखना व्यर्थ है।** काय का कृशपना तो रोगी, दरिद्री, पराधीनता से मिथ्यादृष्टि के भी हो जाता है। देह को कृश करने के साथ ही साथ राग-द्वेष-मोहादि को कृश करके, इसलोक-परलोक संबंधी समस्त वांछा का अभाव करके, देह के मरण में कुटुम्ब-परिग्रहादि समस्त पर द्रव्यों से ममता छोड़कर, परम वीतरागता से संयम सहित मरण करना वह कषाय सल्लेखना है।

यहाँ ऐसा विशेष जानना : जो विषय-कषायों को जीतनेवाला होगा; उसी में समाधिमरण करने की योग्यता है। विषयों के आधीन तथा कषाय युक्त के समाधिमरण नहीं होता है।

संसारी जीवों के ये विषय-कषाय बड़े प्रबल है, बड़े-बड़े सामर्थ्यधारियों द्वारा नहीं जीते जा पाते हैं। इन्होंने बड़े प्रबल बल के धारक चक्रवर्ती, नारायण, बलभद्र आदि को भ्रष्ट करके अपने आधीन किया है; अतः अत्यन्त प्रबल हैं।

संसार में जितने भी दुःख हैं; वे सभी विषयों के लम्पटी, अभिमानी तथा लोभी को होते हैं। कितने ही जीव जिनदीक्षा धारण करके भी विषयों की आताप से भ्रष्ट हो जाते हैं, अभिमान व लोभ नहीं छोड़ सकते हैं। अनादिकाल से विषयों की लालसा से लिप्त व कषायों से प्रज्ज्वलित संसारी जीव अपने को भूलकर स्वरूप से भ्रष्ट हो रहे हैं।

विषय-कषायों से छूटकर वीतरागता कराने के लिये श्री भगवती आराधना जी शास्त्र में विषय-कषायों का स्वरूप विस्तार से परम निर्ग्रन्थ श्री शिवार्य नाम के आचार्य ने प्रकट दिखाया है।

वीतरागता के इच्छुक पुरुषों को ऐसा परम उपकार करनेवाले ग्रन्थ का निरन्तर अभ्यास करना चाहिये।

समाधिमरण के समय में जीव का कल्याण करनेवाला उपदेशरूप अमृत की सहस्त्रधारा रूप होकर वर्षा करता हुआ भगवती आराधना नाम का ग्रन्थ है, उसकी शरण अवश्य ग्रहण करने योग्य है। इसलिये यहाँ पर आराधनामरण (समाधिमरण) के कथन करने का अवसर पाकर भगवती आराधना के अर्थ का अंश लेकर लिख रहे हैं।

यहाँ ऐसा विशेष जानना : साधु (मुनियों) पुरुषों को तो रत्नत्रय धर्म की रक्षा करने में सहायक आचार्य आदि का संघ तथा वैयावृत्य करने वाले धर्म का उपदेश देनेवाले निर्यापकों की बड़ी सहायता प्राप्त हो जाती है। इसलिये **गृहस्थों को भी धर्मवृद्ध-श्रद्धानी-ज्ञानी साधर्मियों का समागम अवश्य बनाये रखना चाहिये। परन्तु यह पंचमकाल अति विषम है। इसमें तो विषयानुरागियों तथा कषायी जीवों का साथ मिलना सुलभ है; राग-द्वेष-शोक-भय उत्पन्न करानेवाले, आर्तध्यान बढ़ानेवाले, असंयम में प्रवृत्ति करानेवालों का ही साथ बन रहा है। स्त्री, पुत्र, मित्र, बांधव आदि सभी अपने राग-द्वेष विषयकषायों में लगाकर आत्मा को भुला देनेवाले हैं। सभी अपने विषय-कषाय पुष्ट करने के ही इच्छुक हैं।**

धर्मानुरागी, धर्मात्मा, परोपकारी, वात्सल्यता के धारी, करुणा रस से भीगे पुरुषों का संगम महा उज्ज्वल पुण्य के उदय से मिलता है; तथापि अपने पुरुषार्थ से उत्तम पुरुषों के उपदेश का संगम मिलाना चाहिये। स्नेह और मोह के जाल में उलझानेवाले धर्म रहित स्त्री-पुरुषों का साथ दूर से ही छोड़ देना चाहिये।

परवशता से कोई कुसंगी आ जाय तो उससे बात करना छोड़ कर मौन होकर रहना। अपने कर्मोदय के

आधीन देश-काल के योग्य जो स्थान प्राप्त हुआ हो उसी में रहकर शयन, आसन, अशन करना। **जिनशास्त्रों की परमशरण ग्रहण करना, जिनसिद्धान्तों का उपदेश धर्मात्माओं से सुनना।** त्याग, संयम, शुभध्यान, भावनाओं को विस्मरण नहीं करना; क्योंकि धर्मात्मा-साधर्मी भी अपने तथा दूसरों के धर्म की पुष्टता चाहते हैं; धर्म की प्रभावना चाहते हुए धर्मोपदेशादि रूप वैयावृत्य में आलसी नहीं होना; त्याग, व्रत, संयम, शुभध्यान, शुभभावना में ही **आराधक साधर्मी को लीन करना चाहिये।**

यदि कोई आराधक ज्ञान सहित होकर भी कर्म के तीव्र उदय से तीव्र रोग, क्षुधा, तृषादि परीषह सहन करने में असमर्थ होकर व्रतों की प्रतिज्ञा तोड़ने लगे, अयोग्य वचन भी कहने लगे, रुदनादि रूप विलापरूप आर्त परिणाम हो जायें तो **साधर्मी बुद्धिमान पुरुष उसका तिरस्कार नहीं करे, कटुवचन नहीं कहे, कठोर वचन नहीं कहे; क्योंकि वह वेदना से तो दुःखी है ही, बाद में तिरस्कार के व अवज्ञा के वचन सुनकर मानसिक दुःख पाकर दुर्ध्यान करके धर्म से विचलित हो जाये, विपरीत आचरण करने लगे, आत्मघात कर ले। इसलिये आराधक का तिरस्कार करना योग्य नहीं है।**

उपदेशदाता को बहुत धीरता धारण करके आराधक को स्नेह भरे वचन कहना, मीठे वचन कहना, जो हृदय में प्रवेश कर जायें, जिन्हें सुनते ही समस्त दुःख भूल जाये। करुणारस से भरे उपकारबुद्धि से भरे वचन कहना चाहिये।[१]''

इसप्रकार मार्गदर्शन देने के उपरान्त वे पंडित सदासुखदासजी सल्लेखना धारण करने वाले को संबोधित करते हैं; उसका महत्त्वपूर्ण अंश इसप्रकार है -

''**हे धर्म के इच्छुक!** अब सावधान हो जाओ। पूर्व कर्म के उदय से रोग, वेदना, महाव्याधि उत्पन्न हुई है, परीषहों का कष्ट पैदा हुआ है, शरीर निर्बल हो गया है, आयु पूर्ण होने का अवसर आया है। अतः अब दीन नहीं होओ, कायरता छोड़कर शूरपना ग्रहण करो। कायर व दीन होने पर भी असाताकर्म का उदय नहीं छोड़ेगा। दुःख को हरण करने में कोई भी समर्थ नहीं है।

असाता को दूर करके साताकर्म देने में कोई इन्द्र, धरणेन्द्र, जिनेन्द्र समर्थ नहीं है। कायरता दोनों लोकों को नष्ट करनेवाली है, धर्म से पराङ्मुखता करानेवाली है। अतः धैर्य धारण करके क्लेशरहित होकर भोगोगे तो पूर्वकर्म की निर्जरा होगी तथा नवीन कर्म के बंध का अभाव हो जायेगा। **तुम जिनधर्म के धारक धर्मात्मा कहलाते हो, सभी लोग तुम्हें ज्ञानवान समझते हैं।** धर्म के धारकों में विख्यात हो, व्रती हो, व्रत-संयम की यथाशक्ति प्रतिज्ञा ग्रहण की है, यदि तुम अब त्याग-संयम में शिथिलता दिखलाओगे तो तुम्हारा यश तथा परलोक तो बिगड़ेगा ही; किन्तु अन्य धर्मात्माओं की व धर्म की भी बहुत निन्दा होगी, अनेक भोले जीव धर्म के मार्ग में शिथिल हो जायेंगे।[१]

क्रम से देह को इस तरह कृश करो, जिससे वात-पित्त-कफ का विकार मंद होता जाय, परिणामों की विशुद्धता बढ़ती जाय। इसप्रकार आहार के त्याग का क्रम पहले कहा ही है। बाद में अन्त समय में जितनी शक्ति हो उसके अनुसार जल का भी त्याग करना।

अंतिम समय में जब तक शक्ति रहे तब तक पंच नमस्कार मंत्र तथा बारह भावनाओं का स्मरण करना। जब शक्ति घटने लग जाये तो अरहन्त नाम का ही, सिद्ध नाम मात्र का ही ध्यान करना। (क्रमशः)

१. रत्नकरण्ड श्रावकाचार, पृष्ठ-४५० से ४५२

१. रत्नकरण्ड श्रावकाचार, पृष्ठ-४५२

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

15 से 20 अप्रैल	मकरोनिया-सागर	पंचकल्याणक
25 से 30 अप्रैल	सोलापुर	समयसार विधान
1 से 6 मई	सूरत	समयसार विधान
20 मई से 6 जून	द्रोणगिरि	प्रशिक्षण शिविर
8 जून से 9 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ
12 से 21 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर

आवश्यक सूचना

दिनांक 17 मार्च को जैनपथप्रदर्शक में प्रकाशित सूचनानुसार इन्दौर में लगने वाला प्रतिष्ठाचार्य प्रशिक्षण शिविर को आगामी सूचना तक निरस्त समझा जाये।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

नैरोबी में हुई धर्मप्रभावना

नैरोबी-केन्या (अफ्रीका) : यहाँ चैत्र माह के दशलक्षण पर्व के अवसर पर दिनांक 22 मार्च से 2 अप्रैल 2018 तक जयपुर से पधारे अन्तरराष्ट्रीय युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा प्रवचन-विधान-शिविर द्वारा अभूतपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: दशलक्षण विधान एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन के उपरान्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा प्रवचनसार ग्रन्थ के 47 नयों पर मार्मिक प्रवचन हुए साथ ही सायंकाल कर्म-सिद्धांत पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला।

यहाँ दो दिवसीय विशेष शिविर का भी आयोजन किया गया, जिसमें अर्थसहित नित्य-नियम पूजन, आलोचना पाठ का अर्थ, णमोकार महामंत्र, आचार्य कुन्दकुन्द एवं उनके परमागम, मनुष्यभव की दुर्लभता और आर्ट ऑफ लिविंग आदि विषयों पर मार्मिक व्याख्यान हुये।

दिनांक 29 मार्च को महावीर जन्मकल्याण दिवस के अवसर पर उनकी विशेष पूजन के साथ उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं व शिक्षाओं पर प्रकाश डाला गया। महावीराष्टक व महावीर वन्दना का पाठ एवं रात्रि में श्रेयसभाई राजा व विशाल जैन के निर्देशन में पाठशाला के बच्चों द्वारा ज्ञानवर्धक प्रस्तुति दी गई।

समस्त कार्यक्रम श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में संपन्न हुये। **- हरीशभाई**

डॉ. संजीव गोधा को अर्हत्वचन पुरस्कार

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर द्वारा दिनांक 25 मार्च को कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ एवं ज्ञानोदय पुरस्कारों के साथ 2015 व 2016 के अर्हत्वचन पुरस्कार भी विशिष्ट समारोहपूर्वक प्रदान किये गये।

आयोजन में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर के लिये अर्हत्वचन पुरस्कार (वर्ष-2016) समर्पित किया गया। ज्ञातव्य है कि यह पुरस्कार आपके द्वारा लिखे गये 'पुद्गल द्रव्य एवं वैज्ञानिक आविष्कार' नामक शोध-आलेख के लिये प्रदान किया गया। साथ ही 2016 का यह पुरस्कार प्रो. प्रेमसुमनजी जैन उदयपुर एवं श्री सुरेशजी जैन आई.ए.एस. भोपाल को भी समर्पित हुआ।

टोडरमल स्मारक परिवार की ओर से आपको हार्दिक बधाई।

पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक एवं शाश्वतधाम उदयपुर के युवा ट्रस्टी श्री अंकितजी किकावत, लूणदा को मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर द्वारा पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। आपने यह शोध-प्रबन्ध 'द्वादश अनुप्रेक्षाओं का आध्यात्मिक अध्ययन' विषय पर किया।

इस उपलक्ष्य में टोडरमल महाविद्यालय परिवार एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

सैकेण्डरी स्कूल तक शिक्षार्थ सहायता

ज्ञानोदय चैरिटेबल सोसायटी, नई दिल्ली द्वारा जैन बच्चों के लिये सैकेण्डरी स्कूल तक शिक्षा जारी रखने हेतु आवश्यक आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। आवेदन पत्र के लिये निम्न पते पर लिखें -

GYANODAY CHARITABLE SOCIETY (Regd. No. 4019/2001)
572, ASIAD VILLAGE, NES DELHI-110049
PH. 011-26493538/26492386 or 09811449431

श्रीसंघों के कार्यकर्ताओं से निवेदन है कि अपने नगर के योग्य जैन विद्यार्थियों की सहायता हेतु ऊपर लिखे पते पर सम्पर्क करें। सभी जानकारी व सहायता कार्य गुप्त रखे जाते हैं।

वैराग्य समाचार

(1) मौ (म.प्र.) निवासी ब्र. ज्योतिदीदी का दिनांक 5 मार्च को 40 वर्ष की आयु में ज्ञान-वैराग्यमय शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थीं। आपने अनेक विद्यार्थियों को टोडरमल महाविद्यालय में अध्ययन करने हेतु प्रेरित किया। दिनांक 7 मार्च को आयोजित शोकसभा में डॉ. दीपकजी जैन, जयपुर व्याख्यानार्थ पधारे, जिसमें आपके वैराग्यमय जीवन में पुरुषार्थ की अनुमोदना की गई। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1000/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) सहारनपुर (उ.प्र.) निवासी श्रीमती ब्रिजेशजी जैन का दिनांक 30 मार्च को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप स्वाध्यायी एवं सरल हृदयी महिला थीं, आध्यात्मिक शिविरों में पधारकर तत्त्वज्ञान का लाभ लेती थीं; आपने अनेक पंचकल्याणकों में विशेष सहयोग प्रदान किया था।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

प्रकाशन तिथि : 13 अप्रैल 2018

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com